कार्यक्रम • एमएलएसएम कॉलेज में परिसंवाद का आयोजन

जीवछ मिश्र के उपन्यास में दिखत

मानवीय समस्याओं का वैश्विक रूप

➲ रचनाओं में किया गया तत्कालीन समाज का चित्रण : प्रो. भीमनाथ

प्रतिनिधि ▷ दरभंगा

साहित्य अकादेमी एवं एमएलएसएम कॉलेज के मैथिली विभाग के संयुक्त तत्वधान में गुरुवार को परिसंवाद का आयोजन किया गया. प्रधानाचार्य डॉ विद्यानाथ झा की अध्यक्षता में आयोजित कार्यक्रम में आधुनिकता आ जीवछ मिश्र एवं मैथिली बाल साहित्य विषय पर साहित्यकारों ने विचार रखा. उद्घाटनकर्ता प्रो. भीम नाथ झा आदि ने किया. प्रो. झा ने कहा जीवछ मिश्र के उपन्यास में मानवीय समस्याओं का वैश्विक स्वरूपदृष्टिगोचर होता है. अपने पहले उपन्यास रामेश्वर में तत्कालीन सामाजिक स्थिति का जीवछ मिश्र ने जीवंत चित्रण किया है. नारियों की दुर्दशा को रेखांकित किया है.

प्रो. झा के अनुसार शताब्दी पूर्व के रचनाकार जीवछ मिश्र के उपन्यास में आधुनिकता की विस्तृत कथा है. कहा कि रोचकता की दृष्टि से भी उनके उपन्यास पर चर्चा अपेक्षित है. अकादेमी के परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. प्रेम मोहन मिश्र ने कहा कि मातृभाषा से नयी पीढ़ी के लोग दूर हो रहे हैं. इस दुःखद स्थिति से मैथिली का नुकसान हो रहा है. कहा कि 103 वर्ष पूर्व के समाज की जो स्थिति थी, आज वह नहीं है. ऐसे जीवछ मिश्र प्रासंगिक हैं.

कार्यक्रम का उद्घाटन करते प्रधानाचार्य डॉ विद्यानाथ झा, प्रो. भीमनाथ झा व अन्य.

बाल साहित्य को आगे बढ़ाये जाने का हो प्रयास : उप सचिव

साहित्य अकादेमी के उपसचिव एन सुरेश बाबू ने विद्यार्थियों से अपील की कि माता और धाती का सम्मान करना चाहिए. उससे बढ़कर कोई नहीं होता. उन्होंने बाल साहित्य को आगे बढ़ाने के प्रयास की जरूरत पर बल दिया. डॉ रामानंद झा रमण ने परिसंवाद में बीज भाषण देते हुए कहा कि जीवछ मिश्र चुंकि महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह के अनुयायी थे, इसलिए उनकी मृत्यु के बाद उतराधिकारी रमेश्वर सिंह का उन्हें कोप भाजन होना पड़ा. बावजूद इसके वे संघर्ष करते रहे. डॉ झा ने बांगला साहित्यकार बंकिमचन्द्र से जीवछ मिश्र की तुलना की. अध्यक्षता कर रहे डॉ विद्यानाथ झा ने कहा कि लाख प्रताड़ना के बाद भी जीवछ मिश्र ने साहित्य से समझौता नहीं किया. मैथिली विभागाध्यक्ष प्रो. रमेश झा ने आभार प्रकट किया. डॉ मुरलीधर झा ने संचालन व डॉ शांति नाथ सिंह ठाकु ने अतिथियों का स्वागत किया.

आधुनिकता आ जीवछ मिश्र क्षेत्र एवं मैथिली बाल साहिती विषय पर परिसंवाद आयोजित

दरभंगा। साहित्य अकादमी एवं आइक्यूएसी और मैथिली विभाग महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह मेमोरियल कॉलेज दरभंगा द्वारा आयोजित एक दिवसीय परिसंवाद के विषय आधुनिकता आ जीवछ मिश्र क्षेत्र एवं मैथिली बाल साहिती कार्यक्रम का आयोजन कॉलेज के सभागार में किया गया। इस मौके पर उद्घाटन सत्र में साहित्य अकादमी के उप सचिव एन सुरेश बाबू, मैथिली परामर्श मंडल साहित्य अकादमी के संयोजक डॉ प्रेम मोहन मिश्र, वरिष्ठ मैथिली साहित्यकार डॉ भीमनाथ झा को आमंत्रित किया गया था। वही अध्यक्षीय भाषण एमएलएसएम कॉलेज के प्रधानाचार्य डॉ विद्या नाथ झा ने दिया। बीज भाषण के लिए वरिष्ठ मैथिली साहित्यकार रमानंद झा रमण को आमंत्रित किया गया था। धन्यवाद ज्ञापन मैथिली विभागाध्यक्ष रमेश झा ने की। वही प्रथम सत्र में जीवछ मिस्र के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर आलेख अशोक कुमार झा अविचल ने प्रस्तुत किया। इसके अलावा शांतिनाथ सिंह ठाकुर सुरेश पासवान उषा चौधरी ने भी विचार रखे। द्वितीय सत्र में मैथिली बाल साहिति कार्यक्रम की अध्यक्षता विद्याधर मिश्र ने की। जबकि मैथिली भाषा में बाल साहित्य पत्र-पत्रिका पर आलेख अजीत मिश्र ने प्रस्तुत किया। इसके अलावा मैथिली बाल साहित्य के वर्तमान परि.श्य पर मुरलीधर झा ने विचार रखें जबकि चुनौती और संभावना विषय पर अरुण कुमार ठाकुर को अपने विचार रखने के लिए आमंत्रित किया गया था। इस मौके पर भारी संख्या में साहित्य प्रेमी उपस्थित थे।

शुभारंभ करते अतिथि साथ में प्रधानाचार्य एवं अन्य।

कार्यक्रम • साहित्य अकादमी नई दिल्ली व एमएमएस कॉलेज के मैथिली विभाग की ओर से परिसंवाद आयोजित

मैथिली रचनाकारों ने मिश्र के उपन्यास 'रामेश्वर' पर चर्चा की

भास्कर न्यूज|दरभंगा

साहित्य अकादेमी नई दिल्ली एवं एमएमएस कॉलेज के मैथिली विभाग के संयुक्त तत्वावधान में गुरुवार को एक दिवसीय परिसंवाद का आयोजन हुआ। कॉलेज के प्रधानाचार्य प्रो. विद्यानाथ झा की अध्यक्षता में हुए परिसंवाद में आधुनिक आ जीवछ मिश्र एवं मैथिली बाल साहित्य विषय पर आमंत्रित मैथिली के रचनाकारों ने मिश्र के उपन्यास रामेश्वर पर चर्चा की। समारोह के उद्घाटनकर्ता प्रो. भीम नाथ झा ने जीवछ मिश्र के प्रकाशित उपन्यास में मानवीय समस्याओं को वैश्विक स्वरूप दृष्टिगोचर होता है। उन्होंने मैथिली के अपने पहले उपन्यास रामेश्वर में तत्कालीन सामाजिक स्थिति का जीवंत चित्रण किया है। डॉ. झा के अनुसार शताब्दी पूर्व के रचनाकार जीवछ मिश्र के उपन्यास में आधुनिकता की विस्तृत कथा है।

एमएलएसएम कॉलेज में परिसंवाद का उद्घाटन करते अतिथि।

बाल साहित्य को आगे बढ़ाने के प्रयास की जरूरत : एन सुरेश

साहित्य अकादेमी के उपसचिव एन सुरेश ने छात्रों से अपील की कि माता और धरती का समान करना चाहिए क्योंकि उससे बढ़कर कोई नहीं है। उन्होंने बाल साहित्य को आगे बढ़ाने के प्रयास की जरूरत पर बल दिया। मैथिली के वरिष्ठ रचनाकार एवं धर-बाहर पत्रिका के संपादक डा0 रामानंद झा रमण ने परिसंवाद में बीज भाषण दिया। मैथिली विभागाध्यक्ष प्रो. रमेश झा ने उपस्थित अतिथियों सहित अन्य गणमान्य लोगों के प्रति आभार प्रकट किया। साहित्य अकादमी से पुरस्कृत रचनाकार डॉ. मुरलीधर झा ने संचालन किया।

उन्होंने कहा कि रोचकता की दृष्टि से भी उनके उपन्यास पर चर्चा अपेक्षित है।

मातृभाषा से दूर होती जा रही नई पीढ़ी : प्रो. प्रेम मोहन मिश्र | साहित्य अकादमी के परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. प्रेम मोहन मिश्र ने कहा कि मातृभाषा से विशेष रूप से नयी पीढ़ी के लोग दूर हो रही हैं। उनके अनुसार इस दुःखद स्थिति से मैथिली का नुकसान हो रहा है। उन्होंने बताया कि 103 वर्ष पूर्व के समाज की जो स्थिति थी आज वहीं है। ऐसे जीवछ मिश्र उपन्यासकार के रूप में प्रासंगिक हैं इसलिए उनपर विचार होना जरूरी है।